॥ ॐ ॥ श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः ॥ 卐 ॥

पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) मलमास

रविवार, दि. 17-05-2026 रविवार से,
सोमवार, दि.15-6-2026 तक ।

श्री निखिल चेतना केन्द्र हैदराबाद (तेलंगाणा)

साधारणतः हमारे हिन्दु धर्म शास्त्र के अनुसार युग, वर्ष, मास, पक्ष, दिवस, घटिका, पल यह काल गणना के लिये मान्य माने जाते है। अगर हम सुक्ष्मता से देखते है तो हर युग का, मन्वन्तर का, वर्ष का, मास का, पक्ष का, दिन का नामकरण किया गया है। और उसकी महत्ता बतलाई गई है। सुक्ष्म से सुक्ष्म घटिका, पलों का भी नामकरण है। जैसे अमृत काल, महेन्द्र काल, वक्र काल, शुन्य काल, होरा आदि...।

मै इस विषय मे और ज्यादा सखोल ज्ञान की ओर न जाते हुए प्रधान विषय मलमास, अधिक मास इसकी जानकारी देना चाहता हूँ। चैत्रादि मास अपने नामों से प्रसिद्ध होकर, उन-उन देवताओं ने की उपासना के लिये प्रसिद्ध हुये। लेकिन हर तीन वर्ष बितने के बाद सुर्य और चन्द्र भगवान् की चाल तिथि, नक्षत्रों के अनुसार धिमी और वेगवान् होने से तिथियों की क्षीणता के कारण अधिक मास की उत्पत्ती हुयी, यह क्षीण तिथियों की वजह से उत्पन्न होने के कारण इसे मलमास कहा गया। अब हुआ यह की सभी मासों का नामकरण हुआ। देवता भी अपने अपने मासों मे पुजे जाने लगे। लेकिन मलमास का न नामकरण हुआ, न कोई देवता उसे स्विकार करने को तैयार हुआ। तब इस मास मे काल के अधिकारी महाकाल एवं सृष्टी प्रदाता ब्रह्मा को अपना नामकरण करने एवं कोई देवता को प्रदान कर गौरव प्रदान करने के लिये कहा। लेकिन सभी ने अपनी असमर्थता जताई। तब भगवान् विष्णु ने भगवान् श्री कृष्ण के अवतार एवं उनकी महीमा का वर्णन सुनकर उनके पास गये। लोकोपकारी भगवान् श्री कृष्ण ने मलमास की प्रार्थना सुनकर कहा, यह मास मेरे नाम से पहचाना जायेगा और इस मास का देवता मै कहलाया जाऊँगा। तब राधा देवी भी वहाँ थी, उन्होने कहा इस मास मे जो भगवान् श्री कृष्ण के साथ मेरी आराधना करेगा उसे वैकुण्ठ, कैलाश, शुन्यलोक से भी बढ़कर आनन्ददायक गोलोक मे वास मिलेगा।

तब से इस मास का नाम पुरुषोत्तम मास कहलाया। इस मास की विशेषता यह है कि, प्राण प्रतिष्ठित राधाकृष्ण की युगल मुर्ति की जो महीने भर पुजन कर अंतिम दिन अमावस्या के दिन विशेष दक्षिणा के साथ ब्राह्मण को दान देता है, वह कैसे भी कर्म करने दो, पाप रहित होकर गोलोक मे वास करेगा।

पुरुषोत्तम मलमास मे पुजा का विधान -

1) एक महीना मौन रहकर, एक समय भोजन कर, श्री राधाकृष्ण युगल मुर्ति का पुजन करने वाला, पाप रहित होकर, अंत मे गोलोक वास करता है। अगर अशक्तता के कारण एक महीना न हो सका तो ग्यारह (11) दिन, नही तो पाँच (5) दिन, नही तो तीन (3) दिन, नही तो एक (1) दिन भी यह उपवास कर, भगवान् को प्रसन्न कर सकते है।

2) इस महीने मे राधा जी ने प्रेम से कृष्ण को अपुप (अनारसे - एक प्रकार का मीठा व्यंजन) खिलाये। 33 कोटि देवताओं की अपेक्षा 33 की संख्या मे यह व्यंजन अर्पण करने से भगवान् श्री कृष्ण प्रसन्न होकर, साधक को ऐश्वर्य प्रदान करते है। महीना भर अशक्त व्यक्ति एक (1) दिन तो इसका दान करे।

3) इस महीने मे जो स्त्री अष्टदल कमल या सहस्त्रदल कमल की रंगोली, श्री राधाकृष्ण युगल मुर्ति का पुजन कर, उस रंगोली पर अखण्ड दीप जलाकर अर्पण करती है, वह लक्ष्मी प्राप्ती, धन धान्य, गृह प्राप्ती की अधिकारी बनती है अर्थात् उसे प्राप्त होते है।

4) जो व्यक्ति या स्त्री इस महिने भर श्री राधाकृष्ण युगलमुर्ति के सामने ताम्बुल दान करते है और इस ताम्बुल को खाते है और सुहागन, कुमारी या साधकों को दान देते है, उन्हे सौभाग्य प्राप्त होता है। महीने भर इन दान वस्तुओं को श्री राधाकृष्ण युगल मुर्ति के सामने रखकर दान करनेवाला व्यक्ति स्त्री हो या पुरुष विपुल संपत्ती प्राप्त कर, पुत्र-पौत्रों से युक्त होकर अंत मे गोलोक मे वास करेगा।

दान संकल्प मंत्र- देश काल का संकीर्तन एवं अपने नाम, गोत्र का उच्चारण कर, निम्न प्रकार से बोले, " **मम सहस्त्रावधि स्वर्लोक निवासादि कल्पोक्त फल सिद्धर्थे मलमास प्रयुक्तं अपुप दानं करिष्ये** " इस प्रकार से संकल्प करके दान वस्तु का संक्षिप्त पुजन करे। बाद मे निम्न मंत्र कहते हुए दान दे।

मंत्र - " इदं सोपस्करं त्रयस्त्रिं शद अपुप दानं सदक्षिणाकं,
सताम्बुलं पुरुषोत्तम प्रिती कामस्तुभ्यं संपर्ददे, त्वयादत्तं मिदं
पात्रं परमान्नेन पुरीतं सघृतं प्रतिघृक्कामि प्रीयतां ते दिवाकर "

(I) इन सभी के होते हुए भी जो साधक महीना भर हर रोज श्रीमद् भागवत् का एक श्लोक या अध्याय पढकर अंतिम दिन श्रीमद् भागवत् पुस्तकों का दान विद्वानों को या इच्छुक साधकों को देता है उसकी आने वाली सात पिढीयाँ ज्ञानवान् पैदा होती है और भगवान् श्री राधाकृष्ण की कृपा प्राप्त होती है।

2) जो इस महीने मे गरीब साधकों को वस्त्र दान, दक्षिणा, छत्र, चप्पल आदि दान करते है, भगवान् पुरुषोत्तम जी की कृपा से वे गृह, राज्य एवं धन, ऐश्वर्य प्राप्त करते है।

यह सभी दान जो साधक अपने गुरु को पुरुषोत्तम रुपी साक्षी मानकर करता है उसका भाग्य दिन दुगुना रात चौगुना होकर वृद्धि करता है।

जो अपने गुरु को ही पुरुषोत्तम मानकर उनकी पुजा कर, अपने शक्ति अनुसार दान करता है वह देवताओं का प्रितिकर होकर गुरु मंडल मे वास करता है।

जो गुरु एवं श्री राधाकृष्ण जी की युगल मुर्ति (जो प्राण प्रतिष्ठित हो) को पीले रेशमी वस्त्र पर, केसर से पुरुषोत्तम यंत्र अंकित कर उस पर स्थापित कर पंचोपचार पुजन संपन्न कर, चंदन माला से नित्य सोलह (16) माला जपकर, उनको समर्पित करता है। वह उपरी सभी पुण्यों का अधिकारी बनता है।

मंत्र - " क्लीं कृष्णाय गोविंदाय राधा प्रियाय गोपिजन वल्लभाय स्वाहा "

****

विधान - प्रातः काल बिना किसी से बोले मुंह धो कर इस मंत्र का एक सौ आठ (108) बार जप करे तो धन-धान्य की वृद्धि होगी।

1) " ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं श्रीं लक्ष्मी मम गृहे धनं चिंता दूरं करोति स्वाहा "

****

विधान - प्रतिदिन पंचोपचार से लक्ष्मी पुजन कर एक सौ आठ (108) बार जप करने से अभीष्ट धन का लाभ होगा।

2) " ॐ ह्रीं श्रीं त्रिभुवन स्वामिनि महादेवि महालक्ष्मी
ल ल ल ल हं हः महाप्रभुत्वमर्थ कुरु कुरु ह्रीं नमः "

भवदीय
श्री निखिल चेतना केन्द्र हैदराबाद (तेलंगाणा)
मोबाईल - 9391029811, 9849069834.